Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur
Directorate of Distance Education
T.D.C. 2nd Semester Examination 2016 (Session 2015-18)
Subject:- Hindi (Hons.)
Paper – 2nd
Model Paper (Full Marks – 80)
Answer any four questions:-
किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

(क) आलोचनात्मक प्रश्न – खण्ड (अ) दो प्रश्नोत्तर – 2X20=40

1. रीतिकाल के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालिए।
2. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए।
3. रीतिकाल के प्रेरणा स्त्रोतों पर विचार कीजिए।
4. रीतिमुक्त काव्यधारा का परिचय दीजिए।
5. भारतेन्दु–युग की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. भारतेन्दु के महत्व पर प्रकाश डालिए।
7. द्विवेदी–युग की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
8. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के महत्व पर प्रकाश डालिए।
9. रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि के रूप में बिहारी का मूल्यांकन कीजिए।

(क) आलोचनात्मक प्रश्न – खण्ड (आ) एक प्रश्नोत्तर – 1X20=20

1. घनान्द के विरह–वर्णन के वैशिष्ट्य पर विचार कीजिए।
2. मतिराम की काव्यकला पर प्रकाश डालिए।
3. महाकवि देव की काव्यगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
4. वीररस के कवि के रूप में भूषण का मूल्यांकन कीजिए।
5. मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।
6. भारतेन्दु के प्रेमवर्णन का विवेचन कीजिए।
7. हरिऔध की 'नवधा भक्ति' पर प्रकाश डालिए।

(ख) व्याख्यात्मक प्रश्न – दो सप्रसंग व्याख्याएँ – 2X10=20

1. मेरी भवबाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
   जा तन की झाँई परे स्यायु हरित दुति होइ।।
2. भूषण–भार सँझरिहै क्यो इहि तन सुकुमार।
   सूधे पांय न परत धरि सोभा की कैं भार।।
3. घनानन्द जीवन दायक है कुछ भोरिमै पीर हिमै परसौ।
   कबहूँ वा विसासी सुजान के आँगन मो अँसुवावनि लै बरसौ।।
4. घनानन्द प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तै दुसरौ ऑक नहीं।
   तुम कौन धौं पारी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु हटाँक नहीं।।
5. कुंदन को रंग फीको लगै झलकै अति अंग न चारू गुराई।
   आँखिन में अलसानि चितौनि में मंजु विलासन की सरसाई।
   को बिन भोल बिकात नहीं मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
   ज्यों–ज्यों निहारिये नेने है नैननि त्यों–त्यों खरी निखरैसी निकाई।।
6. शुचि सुधा सींचता रात में तुझ पर चन्द्र प्रकाश है,
   हे मातृभूमि! दिन में तरणि करता तम का नाश है।
7. इंद्र जिभि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,
   रावण सदंभ पर रघुकुल राज है।
8. सेहत ओढ़े पीत–पट, स्याभ सलोने गात।
   मनहु नीलमनि सैल पर, आतय पर्यौप्रभात।।